अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर

कक्षा : छठी – जैनागम स्तोक वारिधि (परीक्षा 08 जनवरी, 2017)

समय : 3 घण्टे अंक : 100

रोल नं.: (अंकों में) .....

(शब्दों में) .....

परीक्षा केन्द्र की कोड संख्या :

केन्द्राधीक्षक/निरीक्षक के हस्ताक्षर

परीक्षार्थियों के लिए आवश्यक निर्देश–

सावधान

1. परीक्षा में नकल नहीं करें। 2. प्रामाणिकता से परीक्षा देकर ईमानदारी का परिचय दे।
3. मायावी नहीं मेधावी बनें। 4. नकल से नहीं अकल से कम लें।

1. सभी प्रश्नों के उत्तर इसी पत्रक में प्रश्न के नीचे/सामने छोड़े गये रिक्त स्थान में ही लिखें।
2. काली अथवा नीली स्याही का प्रयोग करें, लाल स्याही का नहीं।
3. उत्तीर्ण होने के लिए कम से कम 50 प्रतिशत अंक पाना अनिवार्य है अन्यथा अनुत्तीर्ण माना जाएगा।
4. अधीक्षक, पर्यवेक्षक एवं वीक्षक के निर्देशों का पालन करें।
5. कहीं पर भी अपना नाम अथवा केन्द्र का नाम नहीं लिखें।

जाँचकर्त्ता के प्रयोग हेतु–

प्रश्न क्र.	1	2	3	4	5	6	कुल योग
प्राप्तांक							
पूर्णांक	10	10	10	20	18	32	100
पुनः जाँच							

जाँचकर्त्ता के हस्ताक्षर

प्र.1 निम्नलिखित प्रश्नों में से सही उत्तर का क्रमाक्षर कोष्ठक में लिखिए :- **10x1 = (10)**

(a) मिथ्यात्व मोहनीय कर्म का उत्कृष्ट बन्ध एकेन्द्रिय को होता है-

(क) 70 कोडाकोड़ी सागर (ख) 1000 सागर

(ग) 100 सागर (घ) 1 सागर ( )

(b) निम्नलिखित आयु की उत्कृष्ट स्थिति संक्लिष्ट परिणाम में बन्धती है-

(क) देवायु (ख) मनुष्यायु

(ग) तिर्यंचायु (घ) नरकायु ( )

(c) 15 कोडा कोड़ी सागर की स्थिति का बंध होने पर अबाधाकाल होगा -

(क) 3000 वर्ष का (ख) 15 सागर का सातिया भाग

(ग) 1500 वर्ष का (घ) इनमें से कोई नहीं ( )

(d) घोलमान परिणाम में निम्न आयु का बन्ध होता है-

(क) नरक आयु का (ख) मनुष्यायु का

(ग) देवायु का (घ) तीनों का ( )

(e) मनुष्यिनी में योग पाये जाते हैं-

(क) 15 (ख) 11

(ग) 13 (घ) 01 ( )

(f) पंचेन्द्रिय के पर्याप्त में उपयोग पाये जाते हैं-

(क) 12 (ख) 09

(ग) 03 (घ) 10 ( )

(g) सूक्ष्म वनस्पति के अपर्याप्त में लेश्याएँ मिलती हैं-

(क) 04 (ख) 06

(ग) 03 (घ) 01 ( )

(h) वनस्पति काय का वर्ण है-

(क)काला (ख) हरा

(ग) नाना प्रकार का (घ) पीला ( )

(i) 'दिसाणुवाई' का थोकड़ा किस सूत्र से लिया गया है-

(क) भगवती सूत्र (ख) पन्नवणा सूत्र

(ग) संकलन रूप है (घ) औपपातिक सूत्र ( )

(j) निम्न में से भाव दिशा है-

(क) नारकी (ख) देवता

(ग) दोनों नहीं (घ) दोनों ( )

प्र.2 निम्न प्रश्नों के उत्तर 'हाँ' अथवा 'नहीं' में दीजिए :- **10x1 = (10)**

(a) वायुकाय जंगमकाय है। ( )

(b) मसूर की दाल के संस्थान वाली काय का स्वभाव कठोर है। ( )

(c) सन्नी पंचेन्द्रिय में लगातार आठ भव नहीं होते हैं। ( )

(d) सिद्धों का उद्‌वर्तन सिर्फ एक बार होता है। ( )

(e) 98 बोल में 24वाँ बोल सम्मूर्च्छिम मनुष्य का है। ( )

(f) 98वें बोल में सिर्फ संसारी जीवों का समावेश है। ( )

(g) 74वें बोल का एक भी जीव मोक्ष में नहीं जावेगा। ( )

(h) चौथे गुणस्थान वाले जीव आयुकर्म की अन्तः कोटाकोटि सागरोपम स्थिति को ही बान्धते हैं। ( )

(i) आयु बन्ध में एक मुहूर्त्त का काल लगता है। ( )

(j) समकित मोहनीय को कांक्षा मोहनीय भी कहा है। ( )

प्र.3 निम्नलिखित में क्रम से जोड़ी मिलाकर उत्तर रिक्तस्थान में लिखिए:- **10x1 = (10)**

(a)	खेचर स्थिति संख्यात गुणी	(क) 91वाँ बोल	.....
(b)	सिद्ध भगवन्त अनन्त गुणा	(ख) 87वाँ बोल	.....
(c)	तिर्यंच जीव विशेषाधिक	(ग) 20 कोटाकोटि सागरोपम	.....
(d)	बादर के पर्याप्त विशेषाधिक	(घ) 10 कोटाकोटि सागरोपम	.....
(e)	भव सिद्धिया विशेषाधिक	(च) 18 कोटाकोटि सागरोपम	.....
(f)	हास्य का उत्कृष्ट स्थिति बंध	(छ) 33वाँ बोल	.....
(g)	सम्यक्त्व मोहनीय का जघन्य स्थिति बंध	(ज) 76वाँ बोल	.....
(h)	सूक्ष्म नामकर्म का उत्कृष्ट स्थिति बंध	(झ) 78वाँ बोल	.....
(i)	अस्थिर नामकर्म का उत्कृष्ट स्थिति बंध	(य) 15 कोटाकोटि सागरोपम	.....
(j)	मनुष्य गति का उत्कृष्ट स्थिति बंध	(र) अन्तर्मुहूर्त्त	.....

प्र.4 मुझे पहचानो :- **10x2 = (20)**

(a) मैं जीवों का उत्पत्ति स्थान हूँ। .....

(b) मेरा गोत्र 'वायुकाय' है, मेरा नाम क्या है ? .....

(c) मैं एक ऐसी काया हूँ कि मेरी योनि से कुलकोड़ी 4 लाख अधिक है। .....

(d) मैं कम से कम अन्तः कोटाकोटि सागर का बंध करता ही हूँ। .....

(e) मैं जीवन में एक बार ही बंधता हूँ। .....

(f) मेरे रहते कर्म अमुक समय तक फल नहीं दे पाते हैं। .....

(g) मुझमें अबाधाकाल के थोकड़े का वर्णन आता है। .....

(h) मैं सातावेदनीय का उत्कृष्ट बंध एक सागर का 3/14 भाग करता हूँ। .....

(I) मैं ऐसी कषाय हूँ जिसको संज्ञी पंचेन्द्रिय जघन्य अन्तर्मुहूर्त्त बांधते हैं। .....

(j) हम दोनों ऐसी प्रकृतियाँ है जिनका जघन्य स्थिति बंध 8 मुहूर्त्त का है। .....

प्र.5 एक या दो वाक्यों में उत्तर दीजिए। (कोई 9) **9x2 = (18)**

(a) 12 मुहूर्त्त का उत्कृष्ट विरह किस-किस का है ?

.....

.....

.....

(b) असन्नी तिर्यंच पंचेन्द्रिय अपर्याप्त अवस्था में शाश्वत होते हैं। क्यों ?

.....

.....

.....

(c) बलदेव का जघन्य एवं उत्कृष्ट विरह लिखिए।

.....

.....

.....

(d) **98 बोल में एक से चार बोल की अल्पबहुत्व लिखिए।**

.....

.....

.....

(e) **98 बोल में 41 से 44 बोल की अल्पबहुत्व लिखिए।**

.....

.....

.....

(f) **98 बोल में 50 से 53 बोल की अल्पबहुत्व लिखिए।**

.....

.....

.....

(g) **समुच्चय जीवों में निद्रा को बांधने वाली जघन्य एवं उत्कृष्ट स्थिति लिखते हुए अबाधाकाल भी लिखिए।**

.....

.....

.....

(h) **असंज्ञी पंचेन्द्रिय छहों सहंनन की उत्कृष्ट स्थिति कितनी-कितनी बांधता है?**

.....

.....

.....

(i) **किन प्रकृतियों की जघन्य एवं उत्कृष्ट स्थिति अन्तः कोटाकोटि सागरोपम की बांधती है ?**

.....

.....

.....

(j) किन-किन प्रकृतियों की उत्कृष्ट स्थिति 40 कोटाकोटि सागरोपम तक बंध सकती है ?

.....

.....

.....

प्र.6 निम्न प्रश्नों के उत्तर तीन-चार वाक्यों में लिखिए : -(कोई-8) **8x4=(32)**

(a) 1500 वर्ष का उत्कृष्ट अबाधाकाल वाली प्रकृतियाँ लिखिए।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

(b) अबाधाकाल के थोकड़े से सम्बन्धित कोई दो ज्ञातव्य लिखिए।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

(c) सातों नारकी के नेरइयों की अल्पबहुत्व लिखिए।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

(d) **98 बोल में 90 से 93 बोल तक जीवस्थान, गुणस्थान, योग, उपयोग, लेश्या सहित लिखिए।**

.....

.....

.....

.....

.....

.....

(e) **9 ग्रैवेयक तथा 5 अनुत्तर विमान इन सभी के देवों का जघन्य एवं उत्कृष्ट विरह लिखिए।**

.....

.....

.....

.....

.....

.....

(f) **सातों नारकी के नेरइयों का जघन्य एवं उत्कृष्ट विरह लिखिए।**

.....

.....

.....

.....

.....

.....

(g) **सातों नारकी के नेरइयों की दिशा की अपेक्षा से अल्प बहुत्व लिखिए।**

.....

.....

.....

.....

.....

.....

(h) **द्रव्य दिशा के 18 भेद लिखिए।**

.....

.....

.....

.....

.....

.....

(I) **'जत्थ जलं तत्थ वणं' पर सार रूप में टिप्पणी लिखिए।**

.....

.....

.....

.....

.....

.....